ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम विषय-हिन्दी

दिनांक—17/04/2021 मंत्र -प्रेमचंद

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

एन सी ई आर टी पर आधारित

मंत्र

-प्रेमचन्द

एक महाशय का किसी झाड़नेवाले से परिचय था। वह दौड़कर उसे बुला लाये मगर कैलाश की सूरत देखकर उसे मंत्र चलाने की हिम्मत न पड़ी। बोला, "अब क्या हो सकता है सरकार ? जो कुछ होना था हो चुका।"

"अरे मूर्ख, यह क्यों नहीं करता कि जो कुछ न होना था, होचुका ।"

जहाँ हास्य की ध्वनि अब करुण क्रंदन और अश्रु-प्रवाह था।

शहर से कई मील दूर एक छोटे से घर में एक बूढ़ा और बुढ़िया अँगीठी के सामने बैठे जाड़े की रात काट रहे थे। इतने में एक आदमी ने द्वार पर आवाज दी, "भगत सो गये? जरा किवाड़ खोलो।"

भगत ने उठकर किवाड़ खोल दिये। एक आदमी ने अंदर आकर कहा, "कुछ सुना डॉक्टर चड्ढा बाबू के लड़के को सौंप ने काट लिया।"
~~~~~~~~~~

भगत ने चौककर कहा, “चड्डा बाबू के लड़के को वही चड्ड बाबू हैं न जो छावनी के बंगले में रहते हैं।"

"हाँ -हाँ, वही शहर में हल्ला मचा हुआ है। जाते हो तो जाओ, आदमी बन जाओगे।"

बूढ़े ने कठोर भाव से सिर हिलाकर कहा, "मैं नहीं जाता। मेरी बला जाए। वहीं पड़ा है। खूब जानता हूँ। भैया को लेकर उन्हीं के पास गया था। खेलने जा रहे थे। पैरों पर गिर पड़ा कि एक नजर देख लीजिए मगर सीधे मुँह से बात न की। भगवान बैठे।सुन रहे थे। अब जान पड़ेगा कि बेटे का गम कैसा होता है? कई लड़के है?

"नहीं जी. सुना है यही तो एक लड़का था।“ सबने जवाब दे दिया।

"भगवान बढ़ा कार्य करने वाला है। उस बखत मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े थे पर उन्हें तनिक भी दया न आयी थी। मैं

तो उनके द्वार पर होता, तो भी बात न पूछता।"

"तो न जाआगे? हमने जो सुना था, सो कह दिया।"

"अच्छा किया। अच्छा किया। कलेजा ठंडा हो गया, आँखें ठंडी हो गयी लड़का भी ठंडा हो गया होगा। तुम जाओ। आज चैन की नींद सोऊंगा (बुड़िया से) जरा तमाखू ला दे। एक चिलम और पीऊंगा। अब मालूम होगा लाला को सारी साहिबी निकल जाएगी, हमारा क्या बिगड़ा? लड़के के मर जाने से कुछ रात तो नहीं चला गया? जहाँ छह बच्चे गए थे, वहाँ एक और चला गया, तुम्हारा तो राज सूना हो जाएगा। उसी के वास्ते सबका गला दबा दबाकर जोड़ा था न! एक बार देखने जाऊँगा, पर कुछ दिन बाद मिजाज का हाल पूछूंगा।”

आदमी चला गया। भगत ने किवाड़ बंद कर लिए, तब चिलम पर तमाखू रखकर पीने लगा।

बुढ़िया ने कहा, "इतनी रात गए जाड़े पाले में कौन जाएगा?

"अरे दोपहर ही होती, तो मैं न जाता। सवारी दरवाजे पर लेने आती, तो भी में न जाता। भूल नहीं गया हूँ। पन्ना की सूरत आज भी आँखों में फिर रही है। इसी निर्दयी ने उसे एक नजर देखा तक नहीं क्या में न जानता था कि वह न बचेगा? खूब जानता था। चड्ढा भगवान नहीं थे कि उनके एक निगाह देख लेने से अमृत बरस जाता नहीं, खाली मन की दौड़ थी। जरा तसल्ली हो जाती। बस, इसलिए उनके पास दौड़ा गया था। अब किसी दिन जाऊँगा और कहूँगा, "क्यों साहब, कहिए, क्या रंग है ?"

भगत के लिए जीवन में यह पहला अवसर था कि ऐसा समाचार पाकर वह बैठा रह गया हो। अस्सी वर्ष के जीवन में कभी न हुआ था कि साँप की खबर पाकर वह दौड़ा न गया हो। सैकड़ों निराशों को उसके मंत्रों ने जीवनदान दे दिया था, पर वह आज घर से कदम नहीं निकाल सका। यह खबर सुनकर सोने जा रहा है। बूढ़े ने कुप्पी बुझायी, कुछ देर खड़ा रहा, फिर बैठ गया। अंत में लेट गया पर यह खबर उसके हृदय पर बोझ की भाँति रखी हुई थी। उसे मालूम हो रहा था उसकी कोई चीज खो गयी है, जैसे सारे कपड़े गीले हो गए हैं या पैरों में कीचड़ लगा हुआ है, जैसे उसके मन में कोई बैठा हुआ उसे घर से निकलने के लिए कुरेद रहा है। बुढ़िया जरा देर में खर्राटे लेने लगी। बूढ़े बातें करते-करते सोते हैं और जरा-सा खटका होते ही जागते हैं। अब भगत उठा, अपनी लकड़ी उठा ली और धीरे से किवाड़ खोले ।

बुढ़िया ने पूछा, “कहाँ जाते हो?”

"कहीं नहीं, देखता हूँ कितनी रात है!”

“अभी बहुत रात है, सो जाओ।" "नींद नहीं आती।"

"नींद काहे को आएगी? मन तो चड्ढ़ा के घर पर लगा हुआ है। "

"चड्ढ़ा ने मेरे साथ कौन-सी नेकी कर दी है, जो वहाँ जाऊँ? वह आकर पैरों पड़े तो भी न जाऊँ।”

“उठे तो तुम इसी इरादे से हो।”

"नही री, ऐसा पागल नहीं हूँ कि जो मुझे काँटे बोए, उसके लिए फूल बोता फिरूँ। "

बुढ़िया फिर सो गयी।

बूढ़े ने फिर किवाड़ खोले, इतने धीरे से कि बुढ़िया को खबर न हुई। बाहर निकल आया। उसी वक्त गाँव का चौकीदार गश्त लगा रहा था, बोला, “कैसे उठे भगत? आज तो बड़ी सरदी है। कहीं जा रहे हो क्या ?"

भगत ने कहा, "नहीं जी, जाऊँगा कहाँ? देखता था, अभी कितनी रात है? भला, कै बजे होंगे?"

चौकीदार बोला, “एक बजा होगा और क्या! अभी थाने से आ रहा था, तो डॉक्टर चड्ढा के बँगले पर भीड़ लगी हुई थी। उनके लड़के का हाल तो तुमने सुना होगा, कीड़े ने छू लिया है। चाहे मर भी गया हो तुम चले जाओ तो शायद बच जाए। सुना है , दस हजार देने को तैयार है। "

भगत, “मैं तो न जाऊँ, चाहे वह दस लाख भी दें। मुझे दस हजार या दस लाख लेकर क्या करना है; कल मर जाऊँगा, फिर कौन भोगनेवाला बैठा हुआ है?"

चौकीदार चला गया। भगत ने आगे पैर बढ़ाया। जैसे नशे में आदमी की देह अपने काबू में नहीं रहती, पैर रहता कहीं है, पड़ता कहीं है, कहता कुछ है, जबान से

निकलता कुछ है। वही हाल इस समय भगत का था। मन में प्रतिकार था पर कर्म मन के अधीन न था।

भगत लाठी खट-खट करता लपका चला जा रहा था। चेतना रोकती थी पर उपचेतना ठेलती थी। सेवक स्वामी पर हावी था। आधी राह निकल जाने के बाद सहसा भगत रुक गया। हिंसा ने क्रिया पर विजय पाई, "मैं यों ही इतनी दूर चला आया। इस जाड़े पाले में मरने की मुझे क्या पड़ी थी; आराम से सोया क्यों नहीं; नींद न आती न सही, दो-चार भजन ही गाता। व्यर्थ इतनी दूर दौड़ा आया। चड्ढा का लड़का रहे या मरे, मेरी बला से मेरे साथ इन्होंने कौन-सा अच्छा सलूक किया था कि मैं उनके लिए मरूँ, दुनिया में हजारों मरते हैं, हजारों जीते हैं। मुझे किसी के मरने जीने से क्या मतलब?"

क्रमशः

छात्र कार्य-प्रस्तुत कहानी को समझ कर पढ़ें।

धन्यवाद